कार्य-शिक्षा के उद्देश्य, कार्य एवं क्राफ्ट शिक्षा के सामाजिक, आर्थिक एवं शिक्षाशास्त्रीय मूल्य
[Aims of Work Education, Social, Economic and Pedagogical Values of Work and Craft Education]

कार्य-शिक्षा
(Work Education)

शिक्षा का महत्वपूर्ण तथा वास्तविक उद्देश्य छात्रों को जीवन में आने वाली चुनौतियों का सामना करने के लिए तैयार करना है। इस लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए ही शिक्षा में जीवन, हस्तशिल्प एवं अन्य कौशलों को शामिल किया जाना आवश्यक है। शिक्षा द्वारा ऐसी क्षमताएँ बच्चों में विकसित की जानी चाहिएँ जो बच्चों को जीवन की मांग तथा चुनौतियों का सामना करने के लिए सक्षम बनाएँ। यह तभी संभव है जब बच्चे किताबी जानकारियों से बाहर आकर कार्य की दुनिया में प्रवेश करें।

कार्य-शिक्षा के उद्देश्य
(Purpose of Work Education)

समय सारिणी में स्थान दिए जाने से यह संभव है कि बच्चे हर परिस्थिति में—

(1) सामुदायिक संसाधनों का अर्थपूर्ण ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे।
(2) गुणवत्तापूर्ण जीवन जीने के कौशल सीख सकेंगे।
(3) स्थानीय उपलब्ध संसाधनों के आधार पर अपनी आजीविका को पहचान सकेंगे।
(4) कार्य के साथ उच्च शिक्षा प्राप्त करने का अवसर ढूँढ़ सकेंगे।
(5) कड़ी मेहनत के साथ कार्य करने में गर्व का अनुभव कर सकेंगे।
(6) पाठशाला के निर्धारण कार्यों में रचनात्मक बदलाव ला सकेंगे।

कार्य-शिक्षा उद्देश्यपूर्ण तथा अर्थपूर्ण शारीरिक श्रम मानी जाती है। यह सामुदायिक सेवा तथा अर्थपूर्ण सामग्री के उत्पादन के रूप में समझी जाती है जिसमें बच्चे आनंद और खुशी को प्रदर्शित कर सकें। कार्य-शिक्षा शैक्षिक गतिविधियों में ज्ञान, समझ, व्यावहारिक कौशलों को शामिल करने पर जोर देती है।

कार्य-शिक्षा के सिद्धान्त
(Principles of Work Education)

(1) यह 'करके सीखना' सिद्धान्त पर आधारित है।
(2) शैक्षिक गतिविधियों में सामाजिक रूप से उपयोगी शारीरिक श्रम को सम्मिलित करके।
(3) किसी भी कार्य में संलग्न रहकर सीखने के सिद्धान्त पर आधारित।
(4) समुदाय के लिए उपयोगी सेवाओं तथा उत्पादक कार्य के रूप में सभी पहलुओं में एक आवश्यक कारक के रूप में।

कार्य-शिक्षा से संबंधित कारक
(Factors Related to Work Education)

कार्य-शिक्षा की सफलता हेतु निम्नलिखित कारक उत्तरदायी हैं—

(1) वैचारिक स्तर पर खुलापन।
(2) श्रम की गरिमा तथा सकारात्मक अभिक्षमता।
(3) समुदाय तथा शाला के मध्य सकारात्मक संबंध।

Scanned with CamScanner

(4) सहयोग की भावना।

(5) कल्पनाशीलता और रचनात्मक योग्यता।

उपरोक्त आधारों पर यह कहा जा सकता है कि कार्य-शिक्षा शारीरिक श्रम के साथ एक अर्थपूर्ण, उद्देश्यपूर्ण सार्थक गतिविधि है जिसे विद्यालयी पाठ्यक्रम के प्रत्येक चरण में संगठित तथा व्यवस्थित तरीके से सामाजिक सेवा के रूप में दिखाई देना चाहिए।

कार्य-शिक्षा में अंतर्निहित क्षमताएँ
(Inherent Capacities in Work Education)

(1) यह सभी विषय पढ़ने के लिए शिक्षकों की भागीदारी सुनिश्चित करती है।

(1) व्यक्तित्व विकास में मदद करती है।

(3) शिक्षा के विभिन्न स्तरों हेतु बच्चों में क्षमताएँ विकसित करती है।

(4) उत्पादन कार्य हेतु व्यावसायिक तैयारी तथा दक्षता विकसित करती है।

(5) विभिन्न उपकरणों, तकनीकों, प्रक्रियाओं, सामग्रियों और वस्तुओं से परिचित कराती है।

(6) सामुदायिक सेवा से संबंधित स्थितियों से परिचित कराने का अवसर प्रदान करती है।

(7) काम की दुनिया से परिचय कराती है।

इस प्रकार हम पाते हैं कि कार्य-शिक्षा का क्षेत्र बहुत विस्तृत है। वस्तुतः हम कह सकते हैं कि पूरी सामाजिक, सांस्कृतिक और आर्थिक स्थितियाँ कार्य-शिक्षा के लिए प्रमुख कार्य क्षेत्र है। कार्य-शिक्षा के माध्यम से विद्यार्थियों को कैसे सक्रिय किया जाए, गतिविधियों का आयोजन करते समय कौन-सा कार्य क्षेत्र मुख्य आधार होगा, कोई सामग्री कैसी बनायी जाये और उपकरण की उपलब्धता आदि। इसके लिए कार्य-शिक्षा को शिल्प से जोड़कर देखना होगा। समय-समय पर हुए अध्ययनों में यह बात सामने आयी है कि कलात्मक गतिविधियों में शामिल छात्र अन्य विषयों में भी तुलनात्मक रूप से अधिक समझ विकसित कर लेते हैं। कलात्मक अभिरुचि जागृत होने और उसमें भागीदारी करने या लीन रहने पर छात्रों का मस्तिष्क तीव्र गति से काम करता है।

कला और शिल्प में अभिरुचि रखने वाले छात्र समस्याओं के हल तलाश करने में अधिक कुशाग्र होते हैं। वहीं उनके अंदर अभिव्यक्ति की क्षमता भी मुखर होती है। अनुशासन, आत्मसम्मान, व्यवस्थापन सहित अनेक गुणों का विकास शिल्प के माध्यम से होता है। प्रत्येक विद्यालय छात्रों के व्यक्तित्व एवं बौद्धिक विकास के साथ अवलोकनात्मक दक्षताओं में गुणात्मक वृद्धि के लिए नियमित रूप से कलात्मक गतिविधियों को संचालित करें।

इस प्रकार कार्य-शिक्षा एवं शिल्प के सामाजिक, आर्थिक एवं शिक्षाशास्त्रीय महत्त्व को निम्नलिखित बिन्दुओं के आधार पर समझा जा सकता है—

कार्य एवं शिल्प शिक्षा का सामाजिक महत्त्व
(Social Values of Work and Craft Education)

प्रभावी कार्य-शिक्षा तभी संभव है जब विद्यालय परिवार एवं समाज तीनों अपनी जिम्मेदारी निभाएँ। यह कथन इस बात की पुष्टि करता है कि बच्चों की शिक्षा के लिए केवल विद्यालय ही जिम्मेदार नहीं वरन् परिवार एवं समुदाय की सहभागिता भी अनिवार्य है। महात्मा गांधी ने विद्यालय और समुदाय को साथ लाने की आवश्यकता पर बल दिया था। उनके अनुसार अगर शिक्षा द्वारा नयी सामाजिक प्रणाली स्थापित करनी है तो विद्यालय और समुदाय अलग नहीं हो सकते। हम सभी जानते हैं कि शिक्षण को समृद्ध बनाने के लिए शिक्षण और अभिभावकों को करीब आना चाहिए। समुदाय को बालकों की जरूरतों की चिन्ता करनी चाहिए। किसी भी परिस्थिति में समाज को बच्चों के विकास और शैक्षिणक उपलब्धता की जिम्मेदारी केवल विद्यालय पर नहीं छोड़नी चाहिए।

समुदाय की कार्य एवं शिल्प शिक्षा में भागीदारी
(Community Engagement in Work and Craft Education)

(1) बच्चों को रोज समय से विद्यालय भेजें।

Scanned with CamScanner

(2) विद्यालय में शिक्षण प्रक्रिया पर नजर रखने के लिए भागीदारी बढ़ाएँ।
(3) समय-सारिणी में कार्य-शिक्षा का समय और उसकी आवश्यकता पर अपनी राय दें।
(4) कार्य शिक्षा से संबंधित गतिविधियों के चयन के संबंध में सुझाव दें।
(5) कार्य-शिक्षा प्रयोगशाला का गठन करने के लिए सक्रिय रूप से योगदान करें। कार्य तथा शिल्प शिक्षा के लिए सामग्री और उपकरणों के क्रय-विक्रय में भागीदार बनें, उनके रखरखाव के बारे में सुझाव दें।
(6) गतिविधियों की प्रदर्शनी में सहयोग दें, विद्यार्थियों के आकलन एवं मूल्यांकन में सक्रिय भागीदारी निभाएं।

विद्यालय द्वारा कार्य एवं शिल्प शिक्षा से संबंधित गतिविधियाँ
(Social Activities Related to Work and Craft Education)

(1) कार्य-शिक्षा में ऐसी क्रियाओं का चयन किया जा सकता है; जैसे—पानी के स्थानों की सफाई, गड्ढों को भरना, सामुदायिक बगीचे में बागवानी, कूड़े का प्रबंधन आदि।
(2) विद्यालय को स्थानीय हस्तकला कार्य प्रदर्शनी के आयोजन में अग्रणी भूमिका निभानी चाहिए।
(3) विद्यार्थियों को श्रम के महत्त्व से परिचित करायें।
(4) विद्यार्थियों को सरकारी अभियानों को चलाने के निर्देश दें।
(5) विद्यार्थियों को समुदाय के संसाधनों का समुचित उपयोग करने के लिए प्रोत्साहित किया जाये।
(6) अभिभावक शिक्षक बैठक (PTM) में कार्य-शिक्षा के महत्त्व की चर्चा करायें।
(7) गृह भेंट/गृह सम्पर्क द्वारा बालकों की शैक्षिक प्रगति के विषय में अभिभावकों को बताया जाना चाहिए।
(8) शिक्षक अनौपचारिक रूप से मिलकर भी अपने विचार रख सकते हैं। संवाद इतना सशक्त हो कि बालक कार्य-शिक्षा के महत्त्व को समझ सकें।

इस प्रकार कार्य शिक्षा एवं शिल्प शिक्षा के सामाजिक महत्त्व को नजरअंदाज नहीं किया जा सकता। यह निम्न प्रकार से कार्य करता है—

(1) बालकों के व्यवहार में परिवर्तन लाती है।
(2) अभिभावकों को पाठशाला से जोड़ती है।
(3) सामुदायिक क्रियाओं के आयोजन से विद्यालय की छवि सुधरती है।
(4) शिक्षकों को जागरूक व सक्रिय बनाती है।
(5) अधिगम को प्रभावी बनाती है।
(6) बच्चे की प्रगति, उपलब्धियों से अभिभावकों को अवगत कराती है।
(7) बालकों को प्रदर्शनी आदि के माध्यम से प्रतिभा प्रदर्शन का अवसर मिलता है।
(8) शिक्षा की गुणवत्ता बढ़ायी जा सकती है।
(9) बच्चों में बहुआयामी व्यक्तित्व के विकास पर बल देती है।
(10) स्थानीय परिवेश को विद्यालय से तथा विद्यालय को स्थानीय परिवेश से संसाधनों की आपूर्ति होती है।

कार्य तथा शिल्प-शिक्षा का आर्थिक महत्त्व
(Economic Values of Work and Craft Education)

कार्य तथा शिल्प शिक्षा सृजनात्मक और वैज्ञानिक है लेकिन यांत्रिक नहीं जिसकी सैद्धांतिक पृष्ठभूमि और व्यवहार की प्रणाली हो, हस्तशिल्प के उत्पादन के चलते, शिल्प के कार्य का कुछ आर्थिक मूल्य है और यह प्रत्यक्ष अनुभव भी देता है। इस प्रकार शिक्षण और उत्पादक कार्य समाज को बदल देता है। शिल्प-कार्य शिक्षा करने के लिए उचित शिक्षकों की नियुक्ति एवं प्रशिक्षण आवश्यक है। इसके साथ ही स्कूलों और शिक्षक प्रशिक्षण संस्थानों को उचित वित्तीय सहायता भी आवश्यक है।

कार्य तथा शिल्प शिक्षा के आर्थिक महत्त्व को निम्न बिन्दुओं के माध्यम से समझा जा सकता है—

(1) सरकारी नौकरियों में परीक्षा उत्तीर्ण करने पर भी रोजगार या आजीविका की कोई गारंटी नहीं है और न ही यह बच्चों को कौशल प्रदान करता है, कार्य/शिल्प शिक्षा द्वारा बालकों में ऐसे कौशल उत्पन्न किये जा सकेंगे, जो उन्हें उभरती अर्थव्यवस्था में उच्च शिक्षा पाने अथवा आजीविका पाने में मदद करेंगे।

Scanned with CamScanner